HW
06.07.24

Ch-5

तुम कब जाओगे, अतिथि

Date
Page

पाठ का सार :- प्रस्तुत पाठ 'तुम कब जाओगे, अतिथि' में शरद जोशी ने ऐसे व्यक्तियों की खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना कोई पूर्व सूचना दिए चले आते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते, भले ही उनका टिके रहना मेज़बान पर कितना ही भारी क्यों न पड़े, लेखक अपने घर में आए अतिथि को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह यक्ष प्रश्न बार-बार आ रहा था कि 'तुम कब जाओगे, अतिथि?' जब लेखक अतिथि को अपने घर को लेके आए थे तब उनकी पत्नी ने अतिथि को आदर नमस्ते कीया था और दो सब्जियाँ और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस शोर उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी, यह उम्मीद कि दूसरे दिन किसी ट्रेन से एक शानदार अतिथि सत्कार की छाप अपने हृदय में ले

कर अतिथि चला जायेगा, पर ऐसा नहीं हुआ, अतिथि दूसरे दिन भी उनके घर में रहे। लेखक को परेशानी हुई फिर भी वह संभाले रहे। अतिथि उनके घर से बिलकुल हिले ही नहीं, अतिथि को देखकर लेखक को फूट पड़नेवाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब बिखाई कहीं गायब हो गई है। हृदय की सरलता अब धीरे-धीरे बेरियत में बदल गई है। पर अतिथि जा नहीं रहा। तो लेखक के मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है - तुम कब जाओगे, अतिथि? लेखक की पत्नी ने अब गुस्से से कहा कि वह अब खिचड़ी बनाएगी क्योंकि वह खाने में हल्की रहेगी कुछ दिन तो लेखक के पत्नी भूखी भी रहती थी, अंत में लेखक ने परेशान होकर ~~कहा~~ - अतिथि को लौट जाने के लिए कहता है और कहता है कि कुर्सी में अतिथि का देवत्व सुरक्षित रहेगा, लेखक दुःख हो कर कहा - उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?